उत्तर मध्यकालीन कला (1000 ई० से 1550 ई० तक) — इस काल में कागज का आविष्कार हो गया था, इस कारण चित्र दीवारों पर न बनाकर कागज पर बनाए गए। देश के पूर्वी भाग में पाल शैली और पश्चिमी भाग में जैन शैली (अपभ्रंश शैली / गुजरात शैली) के चित्र बने।

(1) पाल शैली — पाल राजा बौद्ध धर्म संरक्षक थे। इनके चित्र मुख्यत: बौद्ध ग्रंथ 'प्रज्ञा पारमिता' में अंकित हैं। पुस्तकें ताड़ पत्र पर लिखी गई हैं और किनारे पर बुद्ध की जातक कथाएँ और देवी-देवताओं के चित्र अंकित हैं। कोणात्मक रेखाओं और सीमित रंगों का प्रयोग हुआ है। भित्ति चित्र भी उपलब्ध हैं जो बौद्ध शैली का अंतिम समय प्रगट करते हैं।

(2) जैन या अपभ्रंश शैली — इसे गुजरात शैली और पश्चिमी भारत शैली भी कहते हैं। यह चित्र पूर्णतः जैनधर्म से संबंधित नहीं हैं किंतु यह माना जाता है कि जैन भिक्षुओं द्वारा इन्हें बनाया गया।

(घ) मुगलकालीन कला – (1550 ई० से 1800 ई० तक) — मुगलकालीन कला को चार शैलियों में विभक्त किया जा सकता है – ईरानी शैली, अकबर कालीन शैली, जहाँगीर कालीन शैली और शाहजहाँकालीन शैली।

(1) ईरानी शैली — ईरानी और भारतीय शैली के मिश्रण से जो शैली बनी वह मुगल शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई। ईरान की 'हिरात शैली' बाबर के साथ भारत आई। इस समय के चित्रों में अलंकारिता, उत्कृष्ट रंग समायोजन, प्रकाश एवं छाया का प्रयोग तथा त्रिआयामीय चित्रण है।